30 सितंबर 2011

चौथा दिन

मां कूष्माण्डा

ॐ कूष्माण्डा देव्यैः नमः।

नवरात्र के चौथे दिन आयु, यश, बल व ऐश्वर्य को प्रदान करने वाली भगवती कूष्माण्डा की उपासना-आराधना का विधान है। इस दिन साधक जन अपने मन को अनाहत चक्र में स्थित करके मां कूष्मांडा की कृपा प्राप्त करते हैं। मां सृष्टि की आदि स्वरूपा तथा आदि शक्ति हैं। मां के इसी रूप ने अपने 'ईषत्' हास्य से ब्रह्मांड की रचना की थी। इसी कारण मां को कूष्मांडा कहा गया है। मां का निवास सूर्य मंडल के भीतर के लोक में है। इन्हीं के तेज और प्रकाश से दशों दिशाएं प्रकाशित हैं। जब सृष्टि का अस्तित्व नहीं था, चारों तरफ अंधकार ही अंधकार था, तब भगवती कूष्मांडा ने ब्रह्मांड की रचना की थी। इनकी आठ भुजाएं हैं। उनके सात भुजाओं में - कमण्डल, धनुष, बाण, कमल पुष्प कलश चक्र एवं गदा शोभायमान हैं। आठवें हाथ में जप की माला है जो अष्ट सिद्धि एवं नौ निधियों को देने वाली है। मां भगवती सिंह पर सवार हैं और इनको कुम्हड़ों की बलि अत्यन्त प्रिय है। मां पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति भाव से की गई साधना से तुरंत प्रसन्न होकर अपने भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण करती हैं तथा हर प्रकार से मंगल करती हैं।

साधना विधि

सर्वप्रथम मां कूष्मांडा की मूर्ति अथवा तस्वीर को चौकी पर दुर्गा यंत्र के साथ स्थापित करें इस यंत्र के नीच चौकी पर पीला वस्त्र बिछायें। अपने मनोरथ के लिए मनोकामना गुटिका यंत्र के साथ रखें। दीप प्रज्वलित करें तथा हाथ में पीलें पुष्प लेकर मां कूष्मांडा का ध्यान करें।

ध्यान के बाद हाथ के पुष्प चौकी पर अर्पण करें तथा भगवती कूष्मांडा और यंत्र का पंचोपचार विधि से पूजन करें और पीले फल अथवा पीले मिष्ठान का भोग लगायें। इसके बाद मां का 108 बार मंत्र जाप करें - ॐ क्रीं कूष्मांडायै क्रीं ॐ। इसके बाद मां की प्रार्थना करें। कुम्हड़े की बलि भी दे सकते हैं तथा मां की आरती, कीर्तन आदि करें।

आज के दिन नित्यक्रम से निवृत हो स्नानोपरांत मां भवगती को श्रद्धापूर्वक पूजन करके मालपूआ

मां कूष्माण्डा का भोग बदलेगा आपका भाग्य

का नैवेद्य अर्पण किया जाय औरश्रद्धानुसार गरीब व जरूरतमंद ब्राह्मण को मालपुआ का नैवेद्य दें। इस अपूर्व दानमात्र से ही किसी प्रकार के विघ्न सामने नहीं आ सकते।

जिस जातक की जन्म कुंडली में बुध कमजोर हो या बुध की वजह से आपके जीवन में कोई परेशानी आ रही हो तो माँ भगवती कूष्माण्डा का ॐ कूष्माण्डे च विद्महे सर्वशक्त्यै च

बुध ग्रह पीड़ा निवारण

धीमही। तन्नो देवी प्रचोदयात्। गायत्री का जाप करना बहुत ही शुभ रहेगा।

सम्पूर्ण परिश्रम, प्रयास और कठिन महनत के बावजूद बदनामी का सामना करना पड़ रहा हो, समाज में जग हसाई हो रही हो, व्यापार वृद्धि के लिए किए गए सम्पूर्ण प्रयास विफल हो रहे

संपूर्ण मनोकामना पूर्ति के उपाय

हो, तो आज का दिन उन लोगों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। चार कुम्हड़े (काशीफल या कद्दू), चौकी पर लाल कपड़ा बिछा कर इन सबको उसे पर रख दें। धूप, दीप, नेवैद्य, पुष्प अर्पित करने के बाद पांच माला ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामूण्डाय विच्चे ॐ कूष्माण्डा देव्यै नमः, एक माला ॐ शं शनैश्चराय नमः की जाप करें। तत्पश्चात इनको अपने ऊपर से 11 बार उसार लें, उसारने के बाद छोटे-छोटे टुकड़े करके किसी तालाब में डाल दें। सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति मिल जाएगी।

कल मां स्कन्द माता दिलायेगी संपूर्ण बाधाओं से मुक्ति होगा व्यासायिक बाधाओं का निवारण।